बुद्ध काल या मौर्यपूर्व काल में व्यापारिक श्रेणी व्यवस्था का उद्भव

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग

SNSRKS COLLEGE SAHARSA

इस काल में व्यापारी श्रेणी व्यवस्था का उद्भव हुआ. यह संगठित व्यापार, वाणिज्य, उत्पादन एवं निवेश की प्रणाली थी. ये पांच श्रेणियों शिल्पी (उत्पादक), साहूकार/महाजन (बैंकर) वणियका (व्यापारी), सार्थवाह (यातायात प्रबंधक) क्रय-विक्रयिका (फुटकर विक्रेता) में बंटे होते थे. इन्हें भंडागारिक (ज्येष्ठका या मुखिया) कंट्रोल करता था. इस व्यवस्था का पीढ़ी दर पीढ़ी विकास होता रहा.

श्रेणियों की भूमिका समग्र भारत में -श्रेणियों की भूमिकाएं काफी विविध थी. इन्हें आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, विधिक भूमिका के रूप में समझा जा सकता है.

1. **आर्थिक भूमिका** - श्रेणियां उत्पादन, व्यापार, माल ढुलाई आदि से जुड़ी होती थी. ये बैंकिंग (जमा स्वीकारना तथा ऋण देना) तथा ट्रस्टीशिप (न्यासिता) का भी कार्य करती थी. श्रेणियां खुद कार्य करने के साथ-साथ भाड़े के मजदूर से कार्य करवाती थी.
2. **राजनीतिक भूमिका** - श्रेणियों को राज्य से स्वायत्तता प्राप्त होती थी. श्रेणी प्रमुख को रथ, छत्र, पताका के व्यवहार की इजाजत थी. श्रेणियां अपनी निजी सेनाएं भी रखती थी जिसे श्रेणी बल कहा जाता था.
3. **सामाजिक भूमिका** - श्रेणियां दान एवं पुण्य का कार्य भी करती थी. ये बौद्ध एवं जैन संघ को भारी मात्रा में दान देती थी. इनकी शैक्षिक भूमिकाएं थी. अपने सदस्यों को ये तकनीकी शिक्षा प्रदान करती थी.
4. **सांस्कृतिक भूमिका** - श्रेणियां कला एवं धर्म के विकास में सहयोग देती थी. गुप्तकालीन मंदसौर अभिलेख (मध्य प्रदेश) से श्रेणियों द्वारा मंदिर निर्माण कराए जाने की सूचना मिलती है. ये सड़के भी बनवाती थी.
5. **कानूनी या विधिक भूमिका** - श्रेणियों के अपने निजी कानून थे. श्रेणी प्रमुख मृत्युदंड छोड़कर अपने सदस्यों को कोई भी दंड दे सकता था. यदि श्रेणी संघ की कोई महिला सदस्य संघ में जाना चाहे तो उसे अपने पति के साथ ही संघ प्रमुख से भी इजाजत लेनी पड़ती थी.

स्पष्ट है कि इस काल में आर्थिक दशा अच्छी स्थिति में थी| बुद्धकाल को आर्थिक विकास एवं समृद्धि का काल माना जा सकता है|